समन्वय का ढंग

सुसमाचार का समन्वय मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की सामग्री को व्यवस्थित करने का प्रयास करता है। जॉन कार्टर ने ''समन्वय'' को ''ऐसे कार्य'' के रूप में कहा गया है ''जिसमें सुसमाचार के वृत्तांत इस प्रकार तरतीब दिए जाते हैं जिससे, हमारी जानकारी और अध्ययन के अनुसार [यीशु के] जीवन की घटनाओं के क्रम में, और साथ-साथ मिलती थीं जिससे इन विवरणों का एक साथ अध्ययन किया जा सके।''[1] ''समन्वय'' शब्द से सुझाव मिलता है कि यह चार वृत्तांतों को *मिलाने* का एक प्रयास है।

यह काम आसान नहीं है। मुझे यह बात पचास के दशक में पता चली जब मैंने जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स द्वारा पढ़ाया जाने वाला ''मसीह का जीवन'' कोर्स लिया। हर छात्र को बाइबल की रूपरेखा/यीशु के जीवन के समन्वय के साथ नये नियम की पहली चार किताबों के दो सैट दिए गए थे। हमारा काम पुस्तिकाओं को काटकर अपने खुद के समन्वय को बनाने के लिए कागज़ की सीटों पर इसके भागों को चिपकाना था। पवित्र शास्त्र के उन छोटे-छोटे सभी भागों को मिलाने का काम कितना बड़ा था!

मिलाने का काम कठिन होने का मुख्य कारण यह है कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखकों का उद्देश्य यीशु की क्रमबद्ध जीवनी तैयार करना नहीं था। बल्कि उनका उद्देश्य उसके जीवन पर सामाग्री जुटाना था ताकि पाठकों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि वह परमेश्वर का पुत्र और उद्धार के लिए एकमात्र आशा था।[2]

मसीह के जीवन के कई विभाजन स्पष्ट हैं: उसका जन्म और प्रारम्भिक जीवन, उसकी सेवकाई, उसकी मृत्यु, उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण से चरम तक पहुंचा यरूशलेम में अन्तिम सप्ताह। परन्तु इन विभाजनों में हम घटनाओं की तरतीब के विषय में सुनिश्चित नहीं हो सकते। विशेषतया ''उसकी सेवकाई'' के विशाल विभाजन में यह बात सत्य है।

समन्वय की एक और चुनौती यह है कि हम हमेशा यह सुनिश्चित नहीं हो सकते कि एक विवरण की कोई घटना दूसरे विवरण वाली घटना *ही* है या किसी अन्य समय और स्थान पर हुई *वैसी* ही घटना।[3]

समन्वय बनाने में आने वाली कठिनाइयों के कारण, कुछ लोगों को लगता है कि इसका प्रयास भी नहीं किया जाना चाहिए। अधिकतर विद्वान कम से कम दो कारणों से सुसमाचार के समन्वय का महत्व देखते हुए इस निष्कर्ष से सहमत हैं। पहली बात, सुसमाचार का एक वृत्तांत दूसरे वृत्तांत के अतिरिक्त जानकारी देते हुए ''बाहर लाता है।'' दूसरा, चारों वृत्तांतों को देखने से हमें यीशु का एक ऐसा पहलू मिलता है जो किसी और ढंग

से नहीं मिल सकता। एफ़. लेगर्ड स्मिथ ने कहा है, ''संदर्भ के एक नए अर्थ और उस संदर्भ के भीतर की प्रत्येक घटना के महत्व की अतिरिज़्त प्रशंसा स ... सुसमाचार के चार अलग-अलग वृज़ातों को इकट्ठा करने के प्रयास का कोई भी व्यज़्तिगत परिप्रेक्ष्य बहुत अधिक प्रभाव वाला होगा।''[4] ए. टी. रॉबर्ट्सन ने लिखा है:

> समन्वय ... यीशु के जीवन का गज़ीर अध्ययन करने के लिए समन्वय एक आवश्यक पुस्तक है।... जिसने समन्वय को कभी पढ़ा नहीं है वह यीशु मसीह के जीवन के समानान्तर और प्रतिशिल विवरणों से चमकने वाले प्रकाश से चकित हो जाएगा।[5]

सारांश

मैंने एक बार लिखा था कि ''कलीसिया में हम सब की बड़ी आवश्यकता यह है कि हम में से हर कोई यीशु के जैसा बन जाए। एक वर्ष में उसके जीवन का अध्ययन तो केवल एक शुरूआत है।'' मुझे आशा है कि इस शृंखला से बहुत सी बाइबल ज़्लासों तथा आराधना सेवाओं में बहुत से सुनने वालों को सहायता मिलेगी। सबसे बढ़कर, मेरी प्रार्थना है कि इससे *आपके* जीवन में आशीष मिलेगी।

डेविड रोपर, सह-सज़्पादक
ट्रुथ फ़ॉर टुडे

टिप्पणियां

[1]जॉन फ्रैंज़्लिन पार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 7. [2]इस सच्चाई को अगले पाठ ''सुसमाचार के चार वृज़ांत'' में विस्तार से बताया गया है। [3]इस चुनौती से जुड़ा एक तथ्य यह है कि इन वृज़ांतों में हमेशा मिलते जुलते विवरण नहीं होते। ''सुसमाचार के चार वृज़ांत'' पाठ में इस समस्या पर चर्चा की गई है। [4]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, *द नैरेटड बाइबल इन क्रॉनोलोजिकल ऑर्डर* (यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पज़्लिशर्सज़, 1984), 1351. [5]ए. टी. रॉबर्ट्सन, *ए हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स फ़ॉर स्टूडेन्ट्स ऑफ़ द लाईफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 8.